जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

06 अक्टूबर 2022

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में दो वर्षीय वाइरोलॉजी मास्टर डिग्री कोर्स शुरू

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के मल्टीडिसिप्लिनरी सेंटर इन एडवांस्ड रिसर्च एंड स्टडीज (एमसीएआरएस) ने वाइरोलॉजी में मास्टर्स का दो साल का डिग्री कोर्स शुरू किया है। यह कोर्स पेथोजेनिक वायरस, उनके निदान विधियों, एंटीवायरल ड्रग डिजाइनिंग, वायरस के मोलेक्युलर पैथवेज़ और हाल ही में विकसित उपचार जैसे इम्यूनोथेरेपी और टीकों पर विशेष ध्यान देने के साथ वायरस के विभिन्न डोमेन में सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करेगा। दो साल के पाठ्यक्रम की अवधि के दौरान, छात्रों को कठिन प्रैक्टिकल और व्यावहारिक प्रशिक्षण से गुजरना होगा। इसमें महत्वपूर्ण रूप से, छात्र सीखेंगे कि इम्यूनोफेनोटाइपिंग, फ्लो साइटोमेट्री, मास स्पेक्ट्रोमेट्री और फ्लोरोसेंट माइक्रोस्कोपी जैसे अन्य परखों के अलावा आरटी-क्यूपीसीआर, जीनोम सिक्वेंसिंग और सीआरआईएसपीआर-कैस डायग्नोस्टिक विधियों जैसी वर्तमान अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करके वायरस का पता कैसे लगाया जाए। पाठ्यक्रम संबंधित क्षेत्र में प्रख्यात शिक्षाविदों द्वारा डिजाइन किया गया है, जिनके पास वाइरोलॉजी, जैव प्रौद्योगिकी, सूक्ष्म जीव विज्ञान, जैव रसायन, संक्रामक रोग जीव विज्ञान, कम्प्यूटेशनल और संरचनात्मक जीव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता है।

कोर्स समन्वयक डॉ. जावेद इकबाल, डॉ. मोहन सी जोशी और डॉ तनवीर अहमद ने कहा कि भारत में विशेष रूप से वाइरोलॉजी के क्षेत्र में प्रशिक्षित पेशेवरों की बहुत मांग है। COVID-19 की शुरुआत के बाद, MCARS मजबूत नैदानिक विधियों और उपचारों को विकसित करने में सबसे आगे रहा है। MCARS के संकाय सदस्यों ने CRISPR-Cas तकनीक का उपयोग करके दुनिया का पहला सलाइवा आधारित SARS-CoV-2 डिटेक्शन विकसित किया। पाठ्यक्रम समन्वयकों ने कहा कि यह इनोवेशन इस मास्टर कोर्स की नींव बन गया क्योंकि हमने पिछले दो वर्षों में देखा है कि सप्लाई चेन की एक बड़ी बाधा है, विशेष रूप से प्रशिक्षित पेशेवरों के मामले में जो इन नैदानिक परखों को विकसित और परफोर्म कर सकते हैं। डॉ. जावेद इकबाल (वायरोलॉजिस्ट) ने आगे कहा कि एमसीएआरएस का देश के प्रमुख शोध संस्थानों, अस्पताल और नैदानिक प्रयोगशालाओं के साथ एक विशेष सहयोग है जो छात्रों को विशेष रूप से वायरल डिसीज़ पेथोजेनेसिस के बारे में अधिक व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद करेगा। डॉ. मधुमलार, डॉ. सोमलता और डॉ. अमित ने भी एमसीएआरएस में एमएससी वाइरोलॉजी कार्यक्रम का स्वागत किया।

एमसीएआरएस के निदेशक प्रोफेसर मोहम्मद ज़ुल्फ़िकार ने कहा कि वाइरोलॉजी में एमएससी जैसे पाठ्यक्रम देश के लिए सामाजिक और आर्थिक रूप से फायदेमंद हैं। हम अपने देश की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली को और मजबूत करने के लिए अगली पीढ़ी के शोधकर्ता विद्वानों को प्रशिक्षित करेंगे जो जीवन के लिए खतरनाक संक्रामक रोगों में वैज्ञानिक अनुसंधान में भी सहक्रियात्मक रूप से सुधार करेंगे। छात्रों को सर्वश्रेष्ठ संकाय सदस्यों द्वारा प्रशिक्षित किया जाएगा, जिनके पास वाइरोलॉजी और जैव प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक विशेषज्ञता है। डॉ. एस.एन. काज़िम, जो स्वयं एक प्रशिक्षित वायरोलॉजिस्ट हैं, ने कहा कि चूंकि दुनिया में वायरल संक्रामक रोगों में पोस्ट-कोविड में तेजी से वृद्धि

देखी जा रही है, इस पाठ्यक्रम का पहले से कहीं अधिक महत्व है और हम एमसीएआरएस में यह सुनिश्चित करेंगे कि छात्रों को मोलेक्युलर डाइग्नोसिस से लेकर रोग उपचार तक वाइरोलॉजी की सर्वोत्तम गुणवत्ता शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान मिले। डॉ काज़िम ने यह भी कहा कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने हाल के वर्षों में अधिक क्लिनिकल सहयोग शुरू किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों को विषय का बुनियादी और क्लिनिकल ज्ञान दोनों हो, जो कि वाइरोलॉजी जैसे पाठ्यक्रमों में अधिक महत्वपूर्ण है।

पाठ्यक्रम को रेगुलेटरी बॉडीज ने अनुमोदित किया गया है जिसके आवेदन पत्र जेएमआई वेबसाइट: www.jmi.ac.in पर उपलब्ध हैं। ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 10 अक्टूबर 2022 है।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया